प्रातःक्लास ओमशांति 18.9.67

रिकार्ड–तू प्यार का सागर है– ओमशांति। ज्ञान और अज्ञान। तुम बच्चों में अभी ज्ञान है। भक्त लोग महिमा किसकी करते हैं और तुम बच्चे जो यहां बैठे हो तुम किसकी महिमा सुनते हो। रात–दिन का फर्क है। वह तो ऐसे ही सिर्फ महिमा गाते हैं। इतना प्यार नहीं है ;क्योंकि पहचान नहीं है। तुमको बाप ने पहचान दी है। मैं प्यार का सागर हूं और तुमको प्यार का सागर बनाय रहा हूं। बाप प्यार का सागर कितना सबको प्यारा लगता है। वहां भी सब एक/दो को प्यार करते हैं। यह तुम यहां सीखते हो। किसके साथ भी बैर–विरोध न होना चाहिए। जिसको बाबा लून–पानी कहते हैं। अंदर में किसके लिए नफरत न होनी चाहिए। नफरत करने वाले गोया कलियुगी नर्कवासी हैं। नफरत नहीं करते हैं जानते हो हम सभी भाई–बहन हैं। भाई2 तो हैं ही शांतिधाम में। यहां जब पार्ट बजाते हैं कर्मक्षेत्र पर तो बहन–भाई हैं। ईश्वर के सन्तान हैं। ईश्वर की तो महिमा है। वह ज्ञान का सागर,प्रेम का सागर है। सुख का सागर है। माना सबको सुख देते हैं। तुम सब दिल से पूछो जैसे बाप भविष्य 21जन्मों लिए सुख देते हैं वैसे हम भी यह कार्य करते हैं। अगर बाप के मददगार नहीं बनते,प्यार नहीं करते, एक/दो से विपरीत बुद्धि चलते हैं तो विनश्यंति हो जाते। विपरीत बुद्धि होना असुरों का काम है। अपन को ईश्वरीय सम्प्रदाय कहलाये और फिर एक/दो को दुःख देना, उनको असुर कहा जाता है। तुम बच्चों को किसको भी दुःख न देना है। तुम हो ही दुःखहर्ता–सुखकर्ता। दुःख देने की खयालात भी तुमको न आना चाहिए। वह अपने को असुर सम्प्रदाय समझें न कि ईश्वरीय सम्प्रदाय ;क्योंकि देहअभिमान है। कब याद की यात्रा में रह न सके। याद की यात्रा बिगर कब कल्याण होना न है। वर्सा देने वाले बाप को जरूर याद करना है। तो विकर्म विनाश होंगे। आधा कल्प एक/दो को दुःख देते आये हो। जो एक/दो में लड़ते, तंग करते रहते हैं वह आसुरी सम्प्रदाय में गिने जाते हैं। भल पुरुषार्थी हैं। तो भी कब .....इसलिए बाबा कहते हैं अपना चार्ट रखो। चार्ट रखने से मालूम पड़ेगा हमारा रजिस्टर सुधरता जाता है या वही आसुरी चलन है। बाबा सदैव कहते हैं किसको दुःख न दो। निंदा–स्तुति,मान–अपमान, ठंडी–गर्मी सब सहन करना है। कोई ने कुछ कहा तो शांत रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि उनके लिए दो वचन और कह देना। कोई किसको दुःख देते हैं तो बाप जरूर समझ जावेंगे। बच्चे बच्चे को नहीं कह सकते। अपने हाथ में ला नहीं लेना है। कुछ भी बात है तो बाप के पास आना है। गवर्मेंट में भी यह कायदा है। कोई एक/दो को घूसा नहीं मार सकते। कम्पलेंट कर सकते हैं। लॉ उठाना गवर्मेंट का काम है। तुम भी गवर्मेंट पास आओ। हाथ में ला न लियो। यह तो है ही अपना घर। इसलिए बाबा कहते रहते हैं रोज कचहरी होनी चाहिए। यह भी समझते नहीं हैं। शिवबाबा ऑर्डर करते हैं। बाबा ने कहा है हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। ऐसे मत समझो ब्रह्मा समझाते हैं। हमेशा शिवबाबा ही समझो तो उनकी याद रहेगी। समझो ब्रह्मा भुट्टू है। यह शिवबाबा ने रथ लिया है तुमको ज्ञान सुनाने लिए। सतोप्रधान बनने का रास्ता बाप समझाय रहे हैं। वह है गुप्त। तुम हो प्रत्यक्ष। जो भी डायरैक्शन निकलती है समझो शिवबाबा ही देते हैं। उल्टा–सुल्टा होगा तो रेस्पांसिबल शिवबाबा है। तुमको तो कोई हर्जा नहीं। तुम सेफ रहेंगे। इनका समझने से फिर देहाभिमान में आये उल्टा कर्म करते रहते हैं। ईश्वर के आगे रहने वालों से तो कोई विकर्म न होना चाहिए ;परंतु इतना रिगार्ड रखना जानते ही नहीं। बाप के आगे कैसे चलन होनी चाहिए। राजाओं के आगे राजकुमार कैसे चलते हैं। आजकल तो वह भी तमोप्रधान बन गए हैं। बाप की भी इज्जत लेने में देरी नहीं करते। तुम तो ईश्वरीय दुनियां के बनते हो। बाबा शिव को ही कहते हैं। वर्सा भी उनसे ही मिलता है। वह अभी दादा के तन में हैं। उनके साथ कितन रिगार्ड, रायल्टी से चलना चाहिए। तुम कहते हो ना बाबा हम तो लक्ष्मी–नारायण बनेंगे। फिर सेकेंउ नम्बर बने, थर्ड बने, सूर्यवंशी न बने तो चंद्रवंशी बने। ऐसे तो नहीं हम भल दास–दासी ,घोड़े,गधे बनें। प्रजा बनना तो जैसे घोड़े,गधे ही कहेंगे। तुमको तो यहां दैवी गुण धारण करनी है। आसुरी चलन

न होनी चाहिए। ऐसे भी हैं थोड़ा कुछ समझावेंगे तो उल्टा–सुल्टा बोलने लग पड़ेंगे। निश्चय तो है नहीं। बैठे2 भी कह देते इनमें शिवबाबा आते हैं। हम तो नहीं समझते। माया का भूत आने से आपस में ऐसे2 कह देते। भगवान इनके शरीर में क्या पढ़ावेंगे। आपस में आसुरी संस्कार स्वभाव वाले मिलते हैं तो फिर ऐसे बोलने लग पड़ते हैं। आसुरी बातें ही जबानी से निकलती हैं। बाप कहते हैं तुम आत्माएं रूप–बसंत हो। तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलनी चाहिए। अगर पत्थर निकलती है तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे। गीत भी बच्चों ने सुना। बच्चे कहते हैं बाबा बरोबर प्यार का सागर,सुख का सागर है। शिवबाबा की ही महिमा है। बाप कहते हैं तुम अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो। इसमें बहुत अच्छे2 फेल हो जाते हैं। देहीअभिमानी में ठहर न सकते। देहीअभिमानी बनेंगे तब ही इतना उंच बनेंगे। बहुत टाइम वेस्ट करते हैं फाल्तू बातों में। ज्ञान की बात ही ध्यान में नहीं आती। यह भी गायन है घर की गंगा का मान नहीं रखते। घर के मित्र का इतना मान नहीं रखते। जबकि कृष्ण आदि का चित्र घर में है। फिर श्रीनाथ द्वारे आदि इतना दूर2 क्यों जाते हैं?चित्र तो वही है फिर दर्शन करने इतना दूर भटकते क्यों हैं?वहां मंदिर सुहेणा (सुंदर) देखते तो उनसे लव हो जाता है। भक्ति मार्ग देखो कितना चरिया–खरिया है। शिव की पूजा तुम घर में बैठ करो। इतना दूर2 क्यों जाते हो?है तो पत्थर का ही लिंग ना। पहाड़ से पत्थर निकलती है। वह घिस2 कर लिंग बन जाती है। उनमें कोई पत्थर में सोना भी लगा हुआ होता है। कहा जाता है सोने का कैलाश पर्वत। सोना पहाड़ों से निकलता है। तो थोड़ा2 सोना लगी हुई पत्थर भी होते हैं। फिर जो बहुत अच्छा गुल2 होता है वह बेचते हैं। मारबल का भी खास बनाते हैं। अब भक्ति मार्ग वालों को कहा कि तुम बाहर में इतना भटकते क्यों हो?तो बिगड़ पड़ेंगे। बाप खुद कहते हैं तुम बच्चों ने बहुत पैसे बरबाद किये हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है जो तुमको धक्का खाना पड़ा है। यह है ही भक्ति दुर्गति मार्ग। ज्ञान है सदगति मार्ग। बाप सबकी सदगति करते हैं। फिर क्या चीज है जिससे तुम दुर्गति को पाते हो?यह खेल ही है ज्ञान और भक्ति का। बहुत कहते हैं ज्ञान,भक्ति,वैराग्य ;परंतु अर्थ कुछ नहीं समझते। शंकराचार्य ने भी कहा भगवान भी आकर कहे शास्त्र न पढ़ो तो भी हम नहीं मानेंगे। भक्ति का कितना जोर है। बहुत आते हैं। ज्ञान में आने बाद अगर धंधे आदि में घाटा पड़ गया तो फिर देवी पास जाते हैं वर लेने। फिर यहां से छूट जावेगा। यहां आशीर्वाद की कोई बात नहीं। भक्तिमार्ग प्रार्थना आदि करते हैं। कृपा करो हमारा बच्चा ठीक हो जावे। यह ठीक हो जाये। भक्तिमार्ग में फल मिलता है ;परंतु अल्पकाल क्षणभंगुर। भावना का भाड़ा मिलता है। कोई हनुमान को ,गणेश को याद करते हैं तो उनका सा. हो सकता है। समझते बस सा. से मुक्त हो जावेंगे। यह थोड़े ही जानते हैं हनुमानपुरी वा गणेश पुरी कहां होता है। जहां हम जावेंगे। अभी तुम बच्चों को सारी समझ मिली है। भक्ति है ही दुःख का रास्ता। ज्ञान है सुख का रास्ता। ज्ञान से सतयुग की राजाई मिलती है। अज्ञान से नर्कवासी बनने की राजाई। इस समय राजारानी तथा प्रजा सब नर्क के मालिक हैं ;परंतु यह किसको पता थोड़े ही है कि हम नर्कवासी हैं। जब कोई मरता है तो कहते भी हैं स्वर्गवासी हुआ। तो जब मरे तब स्वर्ग में जाये। इन बातों को तुमने अभी समझा है। अभी तुम कहेंगे हम स्वर्गवासी बनने लिए स्वर्ग की स्थापना करने वाले बाप के पास बैठे हैं। ज्ञान की बूंद मिलती रहती है। थोड़ा भी ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जरूर जावेगा। बाकी है पुरुषार्थ पर। समझते हैं गंगा जल की एक लोटी भी लाने से पतित से पावन बन जावेंगे। लोटी भर कर ले जाते हैं। फिर रोजाना उनसे ड्राप पानी में मिलाय स्नान करते हैं। वह जैसे गंगा स्नान हो जावेगा। विलायत में भी गंगा जल ले जाते हैं। साधुओं को जेल में डाला तो उन्होंने भी गंगा जल मांगा। सरकार को देना पड़े। तो बाप समझते हैं माया बड़ी जोर से थप्पड़ लगाय देती है। विकर्म कर लेते हैं। इसलिए कचहरी करो। .....आपे ही अपन कचहरी करो। अच्छा ही है। तुम अपन को आपे ही राजतिलक देते हो। तो अपनी जांच भी करनी है।

तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप श्रीमत देते हैं। ऐसे2 करो। मुझे याद करो। दैवी गुण धारण करो। जो करेंगे वह पावेंगे। तुम्हारी तो खुशी में रोमांच खड़ी हो जानी चाहिए। बेहद का बाप मिला है उनकी सर्विस में मददगार बनना है। अंधों की लाठी बनना है। जितना जास्ती बनेंगे उतना अपना ही कल्याण होगा। बाबा को घड़ी2 याद करना है। निष्ठा की बात नहीं। एक जगह बैठने की बात नहीं। चलते–फिरते याद करना है। रेल में भी तुम सर्विस कर सकते हो। कोई भी गुरू ,गुसाईं आदि हो ,बोलो आप किसके भक्त हो?उंच ते उंच कौन है?उंच ते उंच बाप ही है उनको याद करो। वर्सा उनसे ही मिलेगा। आत्मा को बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। कोई दान–पुण्य करने से राजा के पास जन्म लेते हैं। सो भी अल्पकाल के लिए। सदा तो राजा नहीं बन सकते। यहां तो बाप कहते हैं यह गारंटी है। वहां यह पता नहीं पड़ेगा कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा ले आये हैं। यह ज्ञान इस समय तुमको मिलता है। तो कितना अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ न करते हैं तो गोया अपने पैर पर कुल्हाड़ी लगाते हैं। चार्ट लिखते रहो तो डर रहेगा। कोई2 लिखते भी हैं। बाबा देखेंगे तो शरमावेंगे। चाल–चलन में बहुत फर्क रहता है। तो बाप कहते है। गफलत छोड़ो। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। रोना पड़ेगा। अपने पुरुषार्थ का पिछाड़ी में सा. जरूर होगा। फिर बार2 बहुत रोना पड़ेगा। क्या यह ही वर्सा मिलेगा?दासी जाय बनेंगे। आगे तो ध्यान में जाय सुनाते थे। फलानी दासी है , यह है। फिर बाबा ने वह बंद कर दिया। पिछाड़ी में फिर तुम बच्चों को सा. होगा। सा. बिगर सजा कैसे मिलेगा?कायदा ही नहीं। बच्चों को युक्तियां भी बहुत समझाई जाती है। पति मारते हैं, गुस्सा करते हैं। तुम हर्षित हो खड़े रहो। बोलो हम पांव पड़ती हैं ,हाथ जोड़ती हैं। हमको सिर्फ पवित्र रहने दो। हमको आवाज आता है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पहनो। माया जीते जगतजीत बनो। अब हम स्वर्ग के मालिक बनें या तुम्हारे ....अपवित्र बन नर्क में जावें। बहुत प्यार ,नम्रता से समझाओ। मुझे नर्क में क्यों ढकेलते हो?ऐसे बहुत बच्चियां हैं। समझाते2 फिर आखिर पति को ले आती हैं। फिर पति कहने लग पड़ता कि यह हमारा गुरू है। इसने हमको बहुत अच्छा रास्ता बताया। बाबा के आगे चरणों में आय गिरते हैं। तो बच्चों को बहुत2 मीठा बनना है। जो सर्विस करेंगे वही प्यारे लगेंगे। भगवान बाप आये है बच्चों के पास। उनकी श्रीमत पर चलना है। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। ऐसे बच्चों हैं। वह क्या काम के रहेंगे?यह पढ़ाई कोई काम की नहीं है। और सब सतसंगों आदि में तो है कनरस, जिससे अल्पकाल सुख मिलता है। यह बाप द्वारा तो 21जन्मों का सुख मिलता है। बाप सुख का सागर, शांति का सागर है। हमको भी बाबा से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब मिलेगा। इसलिए बैज सदैव पड़ा रहे। हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न.....बनना है। किसको दुःख तो नहीं देते हैं। आसुरी चलन तो नहीं चलते हैं। माया ऐसे काम कराती है बात मत पूछो। अच्छे2 घर वाले भी बतलाते थे माया ने यह विकर्म कराय लिया। कोई सच्च बताते हैं। कोई सच्च न बताने से सौना दंड खाय लेते। फिर वह आदत बढ़ती जावेगी। बाप कहते हैं पाप किया है तो रजिस्टर में लिखो और बताय दो। इनको बतलाने से तुम्हारा पाप आधा तो खलास हो जावेगा। सावधान भी करेंगे। सभा में सुनाने से आबरू जावेगी। सुनावेंगे नहीं ,छुपाय देंगे तो फिर करते रहेंगे। श्राप मिल जाता है। न बतलाने से एक बार बदली सौ बार करते रहेंगे। बाबा कितनी अच्छी2 राय देते हैं। परंतु कोई2 को जरा भी असर नहीं होता। अपने तकदीर को जैसे लात मारते हैं। बहुत2 नुकसान करते हैं। अंत में सबको सा. होगा। यह2 बनेंगे। क्लास से ट्रांसफर होते हैं तो मार्क्स निकलती है ना। ट्रांसफर होने पहले रिजल्ट निकलती है। तुम भी उपर क्लास में जाते हो। तो मार्क्स का पता पड़ेगा। फिर बहुत जार2 रोवेंगे। फिर क्या कर सकेंगे। रिजल्ट तो निकल गई है ना। तकदीर में जो था सो लिया। बाबा सब बच्चों को सावधान करते हैं। इनको भी करते हैं। ऐसे नहीं कि यह पास हो गया है। कर्मातीत अवस्था अभी हो न सके। कर्मातीत अवस्था हो जाये तो फिर शरीर छोड़ना पड़े। कुछ न कुछ विकर्म रहे पड़े हैं। अच्छा, बच्चों को गुडमार्निंग।